

राष्ट्रीय संगोष्ठी

‘भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान’

(18–19 दिसम्बर, 2018)

संगोष्ठी प्रतिवेदन

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संगोष्ठी प्रतिवेदन

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग में विभाग की हीरक जयंती वर्ष (2018 ई.) एवं संस्थापक विभागाध्यक्ष प्रो. के. डी. बाजपेयी की शताब्दी वर्ष (2018 ई.) के उपलक्ष्य में **‘भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान’** विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 18–19 दिसम्बर 2018 को किया गया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग तथा जिला पुरातत्त्व संग्रहालय सागर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। जिसके लिये भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली तथा संचालनालय, राज्य पुरातत्त्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश द्वारा अनुदान प्रदान किया गया था।

इस संगोष्ठी में सहभागिता करने वाले विद्वतजनों के द्वारा मध्यप्रदेश की संस्कृति की महत्ता पर शोध पत्रों के द्वारा प्रकाश डालते हुए अपने विचार व्यक्त किये गये। विशिष्ट अतिथि प्रो. विभा त्रिपाठी (बनारस हिन्दु वि.वि.) के द्वारा प्रो. के. डी. बाजपेयी से सम्बन्धित स्मृतियों को साझा करते हुए मध्यप्रदेश की विविध संस्कृतियों पर प्रकाश डाला गया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारतीय इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय सचिव डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय के द्वारा भारतीय इतिहास को, भारतीय संदर्भ में देखने पर बल दिया गया। उन्होंने कहा कि भारतीय इतिहास को विदेशियों या अन्य सन्दर्भों में देखना भारतीय इतिहास के साथ अन्याय है। भारतीय इतिहास की अपनी प्रमाणिकता है और अपनी शैली है, इसके अपने संदर्भों की समुचित व्याख्या होनी चाहिए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के बीजवक्ता, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सदस्य, प्रो. रहमान अली ने साहित्य एवं पुरातत्त्व के आधार पर मध्यप्रदेश की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों, प्राचीन स्थापत्य, मूर्तिशिल्प एवं अभिलेखों के आधार पर भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में मध्यप्रदेश की भूमिका को प्रस्तुत किया। प्रो. रहमान अली ने विभाग द्वारा कराये गये उत्खननों के संदर्भ से भी स्पष्ट किया कि मध्यप्रदेश में द्वितीय सहस्राब्दि ईसा पूर्व में ताम्रपाषाणिक नगरीय सभ्यता पल्लवित हो चुकी थी। प्रो. अली ने बताया कि प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा, एरण, मल्हार, तुमैन, त्रिपुरी एवं नान्दूर में उत्खनन कराये गये। प्रो. रहमान अली ने इन सभी उत्खननों का क्रमशः उल्लेख करते हुए मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक अनुक्रम को प्रस्तुत किया। प्रो. रहमान अली ने प्रो. के. डी. बाजपेयी जी से सम्बन्धित स्मृतियों का साझा किया। उन्होंने प्रो. के. डी. बाजपेयी का पुण्य स्मरण करते हुए कहा कि तुमैन उत्खनन के समय प्रो. अली उत्खनन शिविर में प्रो. के. डी. बाजपेयी के साथ रहे और उत्खनित सामग्री के विप्लेषण में एक दूसरे से विचार साझा किये।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आर. पी. तिवारी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने पुरातात्विक शोध कार्यों में वैज्ञानिक तकनीक का अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया। कुलपति महोदय ने सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थलों का पर्यटकीय महत्व बतलाते हुए सांस्कृतिक विरासत के सहेजने और उनके प्रचार-प्रसार किये जाने पर बल दिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. एस. के. यादव के द्वारा किया गया। संगोष्ठी का परिचय डॉ. आर. पी. सिंह द्वारा दिया गया। संगोष्ठी का स्वागत भाषण एवं आभार संगोष्ठी के निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश द्वारा किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर के पुरातत्त्वज्ञ श्री पी. सी. महोबिया, प्रो. के. डी. बाजपेयी के पुत्र श्री अशोक कुमार बाजपेयी, डॉ. स्नेहरानी जैन, प्रो. आर. पी. पाण्डेय, (ग्वालियर) डॉ. शान्तिदेव सिसोदिया, (ग्वालियर) डॉ. अषर्फीलाल पाठक, डॉ. के.के. त्रिपाठी, डॉ. प्रदीप शुक्ला सहित देश के विविध प्रान्तों से पधारे विद्वानों एवं स्थानीय विद्वानों एवं प्रतिभागियों ने सहभागिता की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षकगण एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

संगोष्ठी के प्रथम एवं द्वितीय अकादमिक सत्र का संचालन विषाल विक्रम सिंह द्वारा किया गया। प्रथम सत्र में प्रमुख रूप से डॉ. राजेन्द्र यादव, डॉ. अनुपमा कौषिक, के द्वारा शोध पत्रों का वाचन किया गया। डॉ. राजेन्द्र यादव ने अपने शोध पत्र में शिवपुरी (म.प्र.) जिले के पुरावशेषों, मंदिरों के स्तम्भों एवं अन्य शिल्प में कला एवं धार्मिक कथानक पर प्रकाश डाला गया।

द्वितीय शोध पत्र डॉ. अनुपमा कौषिक द्वारा पढ़ा गया। डॉ. अनुपमा ने भारतीय संस्कृति में महिलाओं के योगदान को निरूपित करते हुए आँवला नवमी पूजा पर प्रकाश डाला साथ ही हिंदू महिलाओं द्वारा किये जाने वाले अनेक व्रत एवं अनुष्ठानों, धार्मिक संस्कारों की विवेचना करते हुए भारतीय संस्कृति में इनका महत्व निरूपित किया। डॉ. कौषिक ने भारतीय संस्कृति में वृक्षों एवं पौधों को कितना महत्व दिया जाता था धार्मिक दृष्टि कोण प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. विभा त्रिपाठी ने की।

संगोष्ठी के द्वितीय अकादमिक सत्र में डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन ने 'बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति की निरंतरता के अभिलेखीय प्रमाण' शीर्षक पर शोध पत्र का वाचन किया। डॉ. जैन ने बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति के प्रवाह, मंदिर एवं तीर्थकर प्रतिमाओं के निर्माण की निरंतरता की अभिलेखीय साक्ष्यों सहित प्रस्तुत किया। पूर्व मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक के अभिलेखीय प्रमाण डॉ. जैन द्वारा प्रस्तुत किये गये।

इसी सत्र में डॉ. मोहनलाल चढ़ार द्वारा प्रस्तुत शोधपत्र का शीर्षक 'युगयुगीन एरण' था। डॉ. मोहनलाल चढ़ार द्वारा ताम्रपाषाणिक नगर एरण के सांस्कृतिक विकास का सुन्दर अनुक्रम प्रस्तुत किया गया। डॉ. चढ़ार एरण की खोज से लेकर एरण में सम्पन्न समस्त उत्खनन, विभागीय एवं अन्य सर्वेक्षण

कलाओं द्वारा सर्वेक्षण के आधार पर एरण की प्राचीनता, प्रासंगिकता, पुरावषेषों पर सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया।

डॉ. प्रदीप कुमार शुक्ल जी द्वारा प्रस्तुत शोधपत्र मध्यप्रदेश के शैलचित्र एवं संस्कृति विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने मध्यप्रदेश के प्रमुख शैलचित्र केन्द्रों एवं वहाँ से प्राप्त शैलचित्रों की जानकारी प्रस्तुत की। डॉ. शुक्ल ने शैलचित्रों का वर्गीकरण एवं तिथि निर्धारण पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. राजीव कुमार जायसवाल द्वारा मध्यप्रदेश के गुप्तकालीन स्थापत्य एवं कला का अंतर्देशीय सम्बंध विषय पर शोधपत्र वाचन किया गया। डॉ. जायसवाल ने गुप्तकालीन शासकों के अभिलेखों, मुद्राओं, एवं स्थापत्य के माध्यम से तत्कालीन कला एवं मध्यप्रदेश की गुप्तकालीन कला का देश को अन्य भागों की गुप्तकालीन कला का सुन्दर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया। डॉ. जायसवाल का विशेष ध्यानाकर्षण मंदिरों के द्वार स्तम्भों पर उत्तीर्ण मकर वाहिनी गंगा एवं कच्छप वाहिनी यमुना की प्रतिमाओं पर था। साँची के मंदिर, एरण की मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला में गंगा-यमुना प्रतिमा का अंकन किया जाने लगा। गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य की स्वीकारोक्ति बाद में निर्मित नागर शैली में भी की गयी। डॉ. जायसवाल का शोधपत्र गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य के बाद की स्थापत्य में निरंतर स्वीकारोक्ति एवं प्रवाह का सुंदर विवेचना करता है। संगोष्ठी के इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर. पी. पाण्डेय जी ने की।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन, दिनांक 19 दिसम्बर, 2018 को तृतीय एवं चतुर्थ अकादमिक सत्रों का आयोजन किया गया। इन दोनों सत्रों का संचालन विषाल विक्रम सिंह द्वारा किया गया। तृतीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. सी.डी. सिंह ने की। इस सत्र के प्रथम वक्ता डॉ. शान्तिदेव सिसोदिया द्वारा 'मंदसौर जिले की शैलोत्कीर्ण कला का भारतीय संस्कृति में योगदान' शीर्षक पर शोध पत्र का वाचन किया गया। डॉ. सिसोदिया ने मंदसौर की शैलोत्कीर्ण कला, गुहायें जिन्हें सम्राट अशोक ने निर्मित कराया था। इसके बाद छत्तीसगढ़ में भी इस कला के दर्शन होते हैं। डॉ. सिसोदिया ने बतलाया कि इस प्रकार की शैलोत्कीर्ण गुफाएँ एवं कला विन्ध्य क्षेत्र में भी पल्लवित हुयी। ग्राम धमनार में 51 शैलोत्कीर्ण गुफाएँ प्राप्त हुई हैं। जिन्हें बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेतु निर्मित किया गया था। इन गुफाओं से स्तूप, चैत्य एवं बिहार बनाये गये हैं। यहाँ का धर्मराजेश्वर मन्दिर शिक्षा-दीक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी परिसर में गर्भगृह, चैत्यालय है। स्तूप के साथ स्थानक एवं शयन मुद्रा में बौद्ध की प्रतिमा को सुन्दरता से उत्कीर्ण किया गया है। इसी क्रम में पोलाडोंगर की गुफायें हैं। जिन्हें विषाल पर्वत को काट कर बनाया गया है। शोधपत्र का उद्देश्य यह है कि मंदसौर की शैलोत्कीर्ण कला का विस्तार देश में कहाँ-कहाँ हुआ। इस शोधपत्र के संबंध में प्रो. रहमान अली का मत यह है कि मंदसौर की गुफायें अधूरी हैं।

इस सत्र में डॉ. चन्द्रभूषण मिश्र ने 'मध्यप्रदेश से प्राप्त नृसिंह मूर्तियों' का अध्ययन पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि नृसिंह का उल्लेख ब्राह्मण साहित्य में भी प्राप्त होता है। शोधपत्र में नृसिंह प्रतिमा का साहित्यिक वर्णन एवं शास्त्रानुसार नृसिंह की प्रतिमा लक्षणों का विस्तृत एवं महत्वपूर्ण विवेचना की गयी। इस सत्र की अगली वक्ता के रूप में डॉ. किरण दुबे ने अपने शोधपत्र का वाचन किया। डॉ. किरण का शोधपत्र भारतीय संस्कृति के संरक्षण पारम्परिक लोक गीत एवं लोक नृत्य की भूमिका पर आधारित था। डॉ. किरण दुबे ने अपने शोधपत्र में व्याख्यापित किया कि किस प्रकार लोक गीत एवं लोक नृत्य क्षेत्रीय संस्कृति के प्रतिनिधि होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त करते हैं। बुन्देली नृत्य बधाई ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। राई, बधाई, बरेदी, सैरा इत्यादि बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध नृत्य हैं। जो राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं। इन लोक गीतों एवं लोक नृत्यों को विशेष अवसरों, त्योहारों एवं वार्षिक उत्सवों में गायन एवं नृत्य किया जाता है।

इस सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण शोध पत्र प्रो. आर. पी. पाण्डेय, विभागाध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा पढ़ा गया। इस शोध पत्र प्रो. पाण्डेय ने मानव की प्राथमिक गतिविधियाँ एवं पर्यावरण से उसके सम्बंध पर ज्ञान वर्धक जानकारी प्रस्तुत की प्रो. पाण्डेय ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के साथ मानवीय गतिविधियों में परिवर्तन हुए। जैसे-जैसे जलवायु गर्म हुयी वैसे ही नदियों में प्रवाह बढ़ा तथा नयी नदी घाटियाँ निर्मित हुई। इसके साथ ही निम्नपुरापाषाण संस्कृति का विकास हुआ। जब जलवायु ठंडी थी, तो कला एवं संस्कृति के साक्ष्य उच्च भागों में प्राप्त हुये जैसे-जैसे पृथ्वी का तापमान बढ़ता गया साथ ही नदियों, घटियों एवं मैदानों का विस्तार हुआ। इस के साथ निम्नपुरापाषाण कालीन संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ जिसके साक्ष्य मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों से प्राप्त हुये हैं। उच्च पुरापाषाण काल से संबंधित सोहन संस्कृति प्राप्त हुई। इस संस्कृति में खुरचने का युग ब्यूरिन (खुरचनी) विशेष है। नर्मदा घाटी से पुरापाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुये हैं। इसके अगले क्रम में रायसेन जिले में वेतवा एवं अन्य नदी घाटियों के किनारों प्राप्त हुये शैलाश्रयों में शैलचित्र उच्चपुरापाषाण काल से लेकर छठी-सातवीं शताब्दी ईस्वी तक संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। इन शैलचित्रों में तत्कालीन मानवीय गतिविधियाँ तथा पशु जगत का सजीव चित्रण किया गया है। प्रो. पाण्डेय ने सोन नदी घाटी में मिले बॉस निमेडिकस के जबड़े के जीवाष्म के आधार पर पशु जगत एवं बेलन, रामगढ़, बाधौर आदि से प्राप्त पुरा सामग्री की C-14 डेटिंग सूचि भी प्रस्तुत की गयी।

संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में प्रो. बी. के. श्रीवास्तव द्वारा 'बुन्देली लोक गीतों का मध्यप्रदेश के इतिहास में योगदान' विषय पर महत्वपूर्ण शोध पत्र का वाचन किया गया। प्रो. बी. के. श्रीवास्तव ने भारतीय इतिहास एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों में लोकगीतों की भूमिका एवं महत्व पर रोचक एवं सारगर्भित विवरण प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने बताया कि बुन्देली लोकगीतों का गायन के माध्यम राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में

महत्व भूमिका का निर्वाह किया। इसी सत्र के अगले शोधपत्र वक्ता डॉ. मषकूर अहमद कादरी ने 'गौरी दौत' के शैलचित्र एवं संस्कृति पर शोध पत्र प्रस्तुत किया था। डॉ. मषकूर अहमद कादरी ने गौरी दौत के शैलाश्रयों को अपनी नवीन खोज बताया। यहाँ ताम्रपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक शैलचित्र एवं उपकरण प्राप्त हुये हैं।

संगोष्ठी के अकादमिक सत्र में डॉ. अषफीलाल पाठक द्वारा 'भारतीय संस्कृति दमोह क्षेत्र का योगदान' विषय पर शोधपत्र वाचन किया। डॉ. पाठक ने बताया कि दमोह जिले में प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की संस्कृतियों का प्रवाह रहा है। डॉ. पाठक ने बताया कि आद्यैतिहासिक काल तक मानव संस्कृति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुये। दमोह जिले के शैलचित्रों में लोक संस्कृति कि झलक मिलती है। इस क्षेत्र में विविध जनजातियाँ, कोल, भील, निषाद, गौड़ एवं मुण्डा आदि जनजातियाँ निवासरत थी। इन जनजातियों के टोटम भी शैलचित्रों में प्राप्त होते हैं।

प्रो. एन.के. जैन ने 'देवगढ़ की मूर्तिकला' शीर्षक पर शोधपत्र का वाचन किया। इस शोध पत्र में प्रो. जैन ने बताया कि देवगढ़ के मंदिर एरण की भाँति गुप्तकाल में निर्मित हुए। इन मंदिरों में अनेक वैष्णव प्रतिमायें संरक्षित हैं। देवगढ़ का दषावतार मंदिर नागर शैली में निर्मित है। इस मंदिर की द्वार शाखा के दोनों ओर क्रमशः गंगा एवं यमुना की सुन्दर छवि उत्कीर्ण हैं। यहाँ के वराह एवं दषावतार एवं मंदिर के मूल स्वरूप में परिवर्तन हो गया है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपरोक्त शोधपत्रों के अतिरिक्त प्रो. नागेश दुबे, डॉ. आर.पी. सिंह, डॉ. एस. के. यादव, डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. आरती दुबे, डॉ. स्नेहरानी जैन, डॉ. जितेन्द्र कुमार यादव, डॉ. एस. के. पारोचे, डॉ. अनिल कुमार उपाध्याय, डॉ. राजबहादुर छत्री एवं विभागीय शोध छात्र सुल्तान सलाहुद्दीन, विषाल विक्रम सिंह, गोविन्द सिंह दांगी, उमेश चन्द्र पाण्डेय, डॉ. राम प्रकाश गुप्ता आदि ने शोध पत्रों का वाचन किया।

संगोष्ठी के विषेष सत्र में डॉ. के. के. त्रिपाठी एवं डॉ. आर. एन. विष्वकर्मा ने के संस्थापक विभागाध्यक्ष प्रो. के. डी. बाजपेयी से जुड़ी स्मृतियों को साझा किया।

अकादमिक सत्रों के पश्चात् संगोष्ठी के समापन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें रीवा विश्वविद्यालय से पधारे मुख्य अतिथि प्रो. सी. डी. सिंह के द्वारा बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड एवं विन्धप्रदेश की संस्कृति का परिचय देते हुए भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में मध्यप्रदेश के योगदान को बतलाया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे कुलपति के द्वारा मनोनीत प्रो. ए. एन. शर्मा ने मध्यप्रदेश की विविध

संस्कृतियों का भारत की संस्कृति में महत्त्वपूर्ण योगदान को बतलाया। समापन सत्र का आरम्भ डॉ. आकांक्षा के द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत से किया गया तथा संचालन डॉ. एस. के यादव के द्वारा किया गया। संगोष्ठी का सारांश संयोजक डॉ. आर. पी. सिंह के द्वारा तथा अन्त में आभार संगोष्ठी के निदेशक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे के द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी को सुचारु रूप से संचालित करने में शोधार्थी सुल्तान सलाहुद्दीन, विशाल विक्रम सिंह, उमेश चन्द्र पाण्डेय, कृष्णदेव पाण्डेय, अखिल कुमार गुप्ता, ब्रजेन्द्र कुमार, गोविन्द सिंह दांगी, अशोक कुमार यादव, स्वदेश मिश्रा, आदिल खान आदि ने अपना विशेष सहयोग प्रदान किया।

(प्रो. नागेश दुबे)